Tirthankara-bhakti (Verses 1-8)

Verse 1

- **Prakrit:** थोस्सामि हं जिणवरे तित्थवरे केवली अणंतजिणे। णरसुरभवणिंदवंदिए विहुयवरयमले मइण्णे ।। १ ।। 2
- **Hindi:** मैं उन जिनेन्द्र देवों की स्तुति करता हूँ, जो तीर्थंकर हैं, केवली हैं, अनन्त जिनेन्द्र हैं, मनुष्य, असुर तथा भवनेन्द्रों द्वारा वन्दनीय हैं, जिन्होंने ज्ञानावरणादि कर्मरूपी मल को दूर कर दिया है और जो महान् बुद्धिमान हैं ।। १ ।। 2
- **English:** I praise the supreme Jinas, the Tirthankaras and omniscient victors, adored by lords of humans and gods, who have removed the dust of obscuring karmas and possess supreme wisdom.

Verse 2

- **Prakrit:** धम्मं तित्थंकरे जिणे लोगोद्द्योयकरे णमंसामि । अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ।। २ ।। 4
- **Hindi:** मैं धर्म-तीर्थ के कर्ता, जिनेन्द्र और लोक को प्रकाशित करने वाले उन चौबीस ही केवली अरहन्तों को नमस्कार करता हूँ और उनका कीर्तन करता हूँ ।। २ ।। 4
- **English:** I bow to the Jinas, makers of the ford of Dharma who illuminate the world; I sing the glories of the twenty-four Arhants, the omniscient ones.

Verse 3

- **Prakrit:** उसहमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमई च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ।। ३ ।। 4
- **Hindi:** मैं भगवान् ऋषभदेव, अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दननाथ और सुमतिनाथ को नमस्कार करता हूँ। तथा पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ और चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र को वन्दना करता हूँ ।। ३ ।। 4
- **English:** I bow to Rishabha and Ajita, to Sambhava, Abhinandana, and Sumati; I bow to Padmaprabha, to Suparshva, and to Chandraprabha.

Verse 4

- **Prakrit:** सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ।। ४ ।। 4
- **Hindi:** मैं सुविधि (पुष्पदन्त), शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ और वासुपूज्य स्वामी को नमस्कार करता हूँ। तथा विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और शान्तिनाथ जिनेन्द्र को वन्दना करता हूँ ।। ४ ।। 4
- **English:** I bow to Suvidhi (Pushpadanta), Shitala, Shreyansa, and Vasupujya; I bow to Jina Vimala and Ananta, to Dharma, and to Shantinatha.

Verse 5

- **Prakrit:** कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं । वंदामि रिट्ठनेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ।। ५ ।। 5
- **Hindi:** मैं जिनेन्द्र कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ और नमिनाथ भगवान् को नमस्कार करता हूँ। तथा अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ और वर्धमान स्वामी की वन्दना करता हूँ ।। ५ ।। 5
- **English:** I bow to Kunthu, Ara, and Malli, to Munisuvrata, Nami, and Nemi; I bow to Arishtanemi, and to Parshva and Vardhamana.

Verse 6

- **Prakrit:** एवं मए अभित्थुया विहुयययरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ।। ६ ।। 5
- **Hindi:** इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये, कर्म-रज रूप मल को दूर करने वाले तथा जरा और मरण से रहित वे चौबीस ही तीर्थंकर जिनेन्द्र देव मेरे ऊपर प्रसन्न हों ।। ६ ।। 5
- **English:** Thus praised by me, may these twenty-four Tirthankaras, who have destroyed all obscuring veils and are free from old age and death, be pleased with me.

Verse 7

- **Prakrit:** कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा । आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं ।। ७ ।। 6
- **Hindi:** कीर्तन, वन्दना और पूजन को प्राप्त ये लोक के उत्तम जिनेन्द्र सिद्ध भगवान् मुझे आरोग्य (स्वास्थ्य), ज्ञान का लाभ, समाधि और रत्नत्रय प्रदान करें ।। ७ ।। 6
- **English:** May these Jinas and Siddhas—glorified, worshipped, and honored—grant me health, the benefit of knowledge, equanimity, and enlightenment.

Verse 8

- **Prakrit:** चंदिहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहिय पयासंता । सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।। ८ ।। 6
- **Hindi:** जो चन्द्रमाओं से भी अधिक निर्मल हैं, सूर्यों से भी अधिक प्रकाशमान हैं और समुद्र के समान गम्भीर हैं, वे सिद्ध भगवान् मुझे सिद्धि (मोक्ष) प्रदान करें ।। ८ ।। 6
- **English:** More pure than the moons, more radiant than the suns, and deep as the ocean, may the Siddhas grant me perfection (Siddhi).

Anchulika

- **Prakrit:** इच्छामि भंति ! चडठबीसतित्थवरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेठ, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाण अट्ठपरहापाडिहेरसहियाण चउतीसातिसयविसेससजुत्ताणं...
- **Hindi:** हे भगवन ! जो मैंने चौबीस तीर्थंकर भक्ति सम्बन्धी कायोत्सर्ग किया है उसकी आलोचना करना चाहता हूं। जो पांच महाकल्याणकों से सम्पन्न हैं, आठ महाप्रातिहार्यों से सहित हैं, चौतीस अतिशय विशेषों से संयुक्त हैं...
- **English:** I desire, O Lord, to perform the Tirthankara-bhakti Kayotsarga. I wish to perform the critical self-reflection of it. To those supreme Mahapurushas from Rishabha to Mahavira, who are endowed with the five great auspicious events, the eight great miraculous splendors, and the thirty-four extraordinary attributes, I always offer worship and salutations. May this lead to the destruction of my karmas and the attainment of enlightenment.

Siddha-bhakti (Verses 9-20)

Verse 1

- **Prakrit:** अट्ठविहकम्ममुक्के अट्ठगुणड्ढे अणोवमे सिद्धे । अट्ठमपुढविणिविट्ठे णिट्ठियकज्जे य वंदिमो णिच्चं ।। १ ।। 7
- **Hindi:** जो आठ प्रकार के कर्मों से मुक्त हैं, जो आठ गुणों से सम्पन्न हैं, अनुपम हैं, अष्टम पृथिवी में स्थित हैं, तथा अपने समस्त कार्य को जिन्होंने समाप्त किया है ऐसे सिद्धों को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ।। १ ।। 7
- **English:** We constantly bow to the Siddhas, liberated from eight types of karma, endowed with eight supreme qualities, incomparable, and residing at the summit of the universe.

Verse 2

- **Prakrit:** तित्थवरेदरसिद्धे जलथलआयासणिव्वुदे सिद्धे । अंतकडदेदरसिद्धे उक्कस्सजहण्णमज्झिमोगाढे ।। २ ।। 7
- **Hindi:** जो तीर्थंकर होकर सिद्ध हुए हैं, जो तीर्थंकर न होकर सिद्ध हुए हैं, जो जल से, स्थल से अथवा आकाश से निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, जो अन्तकृत होकर सिद्ध हुए, जो अन्तकृत न होकर सिद्ध हुए, जो उत्कृष्ट, जघन्य और मध्यम अवगाहना से सिद्ध हुए हैं... 8
- **English:** I bow to those who became Siddhas as Tirthankaras or otherwise, those liberated from water, land, or air, and those of maximum, minimum, or medium stature.

Verse 3

- **Prakrit:** उड्ढअधतिरिएलोए छव्विहकाले य णिव्वुदे सिद्धे । उवसग्गणिरुवसग्गे दीवोदहिणिव्वुदे व वंदामि ।। ३ ।। 8
- **Hindi:** ...जो ऊर्ध्वलोक, अधोलोक अथवा तिर्यग्लोक से सिद्ध हुए हैं, जो छह प्रकार के कालों में निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, जो उपसर्ग सहकर अथवा बिना उपसर्ग के सिद्ध हुए हैं तथा जो द्वीप अथवा समुद्र से निर्वाण को प्राप्त हुए हैं ऐसे समस्त सिद्धों को मैं नमस्कार करता हूँ ।। ३ ।। 8
- **English:** I bow to the Siddhas liberated from the upper, middle, or lower worlds, during any of the six periods of time, with or without afflictions, and from islands or oceans.

Verse 4

- **Prakrit:** सिद्धे दुगतिगचउणाण पंचचउरजमे । परिपडिदापरिपडिदे संजमसम्मत्तणाणमादीहिं ।। ४ ।। 8
- **Hindi:** जिन्होंने दो, तीन अथवा चार ज्ञानों के पश्चात केवलज्ञान प्राप्त कर सिद्ध पद प्राप्त किया है, जिन्होंने पांचों अथवा परिहारविशुद्धि से रहित शेष चार संयमों से सिद्ध पद प्राप्त किया है, जो संयम, सम्यक्त्व तथा ज्ञान आदि के द्वारा पतित होकर अथवा बिना पतित हुए सिद्ध हुए हैं... 9
- **English:** I bow to the Siddhas who possessed two, three, or four kinds of knowledge and various types of restraint, attaining perfection steadily or after recovering from lapses.

Verse 5

- **Prakrit:** साहरणासाहरणे समुग्धादेदरे य णिव्वादे । ठिदपलियंकणिसण्णे विगयमले परमणाणे वंदे ।। ५ ।। 9
- **Hindi:** ...जो संहरण से अथवा संहरण के बिना ही सिद्ध हुए हैं, अथवा उपसर्गवश सामरण अथवा निराभरण सिद्ध हुए, जो समुद्घात से अथवा समुद्घात के बिना ही निर्वाण को प्राप्त हुए, जो खड्गासन अथवा पल्यंकासन से बैठकर सिद्ध हुए हैं, जिन्होंने कर्ममल को नष्ट कर दिया है और जो परमज्ञान उत्कृष्ट केवलज्ञान को प्राप्त हैं ऐसे सिद्धों को नमस्कार करता हूँ ।। ५ ।। 10

- **English:** I bow to those liberated with or without physical transportation, in standing or lotus postures, and those free of impurities in supreme knowledge.

Verse 6

- **Prakrit:** पुंबेदं वेदंता जे पुरिसा खबगसेढिमारूढा । सेसोदयेण वि तहा झाणुवजुत्ता य ते हु सिज्झंति ।। ६ ।। 10
- **Hindi:** जो पुरुष भावपुरुष वेद का अनुभव करते हुए क्षपक श्रेणि पर आरूढ़ हुए अथवा भावस्त्री अथवा भावनपुंसक वेद के उदय से क्षपकश्रेणि पर आरूढ़ हुए वे शुक्लध्यान में तल्लीन होते हुए सिद्ध अवस्था को प्राप्त होते हैं ।। ६ ।। 10
- **English:** Those who ascend the ladder of destruction while in the male disposition (or remnants of others) and remain absorbed in meditation surely attain perfection.

Verse 7

- **Prakrit:** पत्तेयसयंबुद्धा बोहियबुद्धा य होंति ते सिद्धा । पत्तेयं पत्तेयं समयं समयं पडिवदामि सदा ।। ७ ।। 11
- **Hindi:** जो प्रत्येकबुद्ध, स्वयंबुद्ध अथवा बोधितबुद्ध होकर सिद्ध होते हैं उन सबको पृथक्-पृथक् अथवा एक साथ मैं सदा नमस्कार करता हूँ ।। ७ ।। 11
- **English:** Whether they attained enlightenment spontaneously, by themselves, or through instruction, I bow to all those Siddhas at all times.

Verse 8

- **Prakrit:** पण णव दु अट्ठवीसा चउट्टियणवदी य दोण्णि पंचेव । बावण्णहीणविसया पयडि विणासेण होंति ते सिद्धा ।। ८ ।। 11
- **Hindi:** पांच, नौ, दो, अट्ठाईस, चार, तेरानवे, दो और पांच इस प्रकार क्रम से ज्ञानावरणादि कर्मों की १४८ प्रकृतियों में से मोहनीय कर्म की ४ और शेष कर्मों की ५२ इस प्रकार ५६ प्रकृतियों के क्षय से सिद्ध होते हैं ।। ८ ।। 12
- **English:** They become Siddhas by destroying karma-prakritis in their specific counts: 5, 9, 2, 28, 4, 93, 2, and 5.

Verse 9

- **Prakrit:** सुहमव्वोवाहमणंतं अणोवमं परमं । इंदियविसयातीदं अप्पत्तं अच्चयं च ते पत्ता ।। ९ ।। 12
- **Hindi:** वे सिद्ध भगवान अतिशय, अव्याबाध, अनन्त, अनुपम, उत्कृष्ट, इन्द्रिय विषयों से अतीत, अप्राप्त - जो पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ तथा स्थायी सुख को प्राप्त हुए हैं ।। ९ ।। 12
- **English:** They have attained infinite, unobstructed, incomparable, and supreme bliss beyond the senses, eternal and never before possessed.

Verse 10

- **Prakrit:** लोयग्गमत्थवत्था चरमसरीरेण ते हु किंचूणा । गवसित्थमुग्गब्भे जारिस आवार तारिसायारा ।। १० ।। 13
- **Hindi:** वे सिद्ध भगवान लोकाग्र के मस्तक पर विराजमान हैं, चरम शरीर से किंचित् न्यून हैं तथा जिसके भीतर का मोम गल गया है ऐसे सांचे के भीतरी भाग का जैसा आकार होता है वैसे आकार से युक्त हैं ।। १० ।। 13
- **English:** Residing at the top of the universe, slightly less than their final physical dimensions, shaped like a mold from which the wax has been removed.

Verse 11

- **Prakrit:** जरमरणजम्मरहिया ते सिद्धा मम सुभत्तिजुत्तस्स । दिंतु वरणाणलाहं बुहयण परियत्थणं परमसुद्धं ।। ११ ।। 13
- **Hindi:** जरा, मरण, और जन्म से रहित वे सिद्ध भगवान् समीचीन भक्ति से युक्त मुझ कुन्दकुन्द को बुधजनों के द्वारा प्रार्थित तथा परम शुद्ध उत्कृष्ट ज्ञान का लाभ दें ।। ११ ।। 14
- **English:** Free from birth, old age, and death, may those Siddhas grant to me, full of devotion, the superior knowledge sought by the wise.

Verse 12

- **Prakrit:** चतुरट्ठयदोसविहियं किच्चा काउस्सग्गं च चउरट्ठ सुपरिसुद्धं । अइभत्तिसंपउत्तो जो बंदइ लहु लहइ परमसुहं ।। १२ ।। 14
- **Hindi:** जो बत्तीस दोषों से रहित, अत्यन्त शुद्ध कायोत्सर्ग करके अतिशय भक्ति से युक्त होता हुआ वन्दना करता है वह शीघ्र ही परमसुख को प्राप्त होता है ।। १२ ।। 14
- **English:** He who, with great devotion, performs a pure Kayotsarga free from the thirty-two faults and bows to them, soon attains supreme happiness.

Closing Anchulika:Siddha-bhakti Anchulika (सिद्ध-भक्ति अंचलिका**)**

- **Prakrit:** इच्छामि भते ! सिद्धि भत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मवारित्तजुत्ताणं, अटठविहकम्मविप्पमुक्काण अटठगुणसंपण्णाण, उड़ढलोयमत्थयम्मि प्यटिठयाण...
- **Hindi:** हे भगवन ' मैंने जो सिद्ध भक्ति सम्बन्धी कायोत्सर्ग किया है उसकी आलोचना करना चाहता हूं। जो सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र से युक्त हैं, आठ प्रकार के कर्मों से सर्वथा रहित हैं, आठ गुणों से सहित है, ऊर्ध्वलोक के अग्रभाग पर स्थित हैं...
- **English:** I desire, O Lord, to perform the Siddha-bhakti Kayotsarga. I wish to perform the critical self-reflection of it. To all the Siddhas—those who are endowed with right knowledge, vision, and conduct, who are liberated from the eight types of karma, and who reside at the summit of the universe—I always offer worship and salutations. May this lead to the destruction of my suffering, the attainment of the Three Jewels, and a peaceful death.